भ्रष्टाचार मुक्त भारत

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

भ्रष्टाचार हमारे देश के लिए बहुत बड़ी समस्या है। समाज में कैंसर की तरह यही व्याप्त होता जा रहा है। भ्रष्टाचार के अनेक कारण हैं, किन्तु सिस्टम का जटिल होना एक प्रमुख कारण है। इस कारण से अधिकारी, कर्मचारी भ्रष्टाचार करते हैं। सामान्य व्यक्ति को कानून की पेचिदगी का ज्ञान नहीं होता। इसलिए कानून में उलझाकर एक कार्य के लिए बार–बार व्यक्ति को परेशान कर सामान्य नागरिक से पैसा वसूल लिया जाता है। वकील या अन्य पेशेवर लोग जैसी सलाह देते हैं वैसा ही सामान्य नागरिक करता है। किसी भी कार्यालय में चले जाइये, बिना घुस दिये कर्मचारी कार्य करने को तैयार नहीं हेाता। दूर गांव से गया हुआ व्यक्ति कार्य कराने के लिए पैसा देकर अपनी सहूलियत के अनुसार कार्य कराता हैं। भारत में भ्रष्टाचार को शिष्टाचार कहा जाने लगा है। इसका मतलब यह है कि यदि कोई भी व्यक्ति किसी बड़े अधिकारी के पास जाये तो कुछ न कुछ लेकर के जाये, जिससे वह अधिकारी प्रसन्न हो और उसका कार्य कर दे। भ्रष्टाचार यही से शुरू हो जाता है।

भारतीय संस्कृति के गिरे हुए मूल्यों के पुनर्स्थापना के लिए पुनरूथान कार्यक्रम एक संजीवनी है। आधुनिक युग में समाज में कुछ ऐसी बुराइयां व्याप्त हो गयी हैं जिससे सामाजिक मूल्यों में गिरावट दिखाई दे रही है। भ्रष्टाचार भी एक ऐसी सामाजिक बुराई है जो सर्वत्र व्याप्त है। आजकल लोग प्रायः कहते हैं कि भ्रष्टाचार शिष्टाचार बन गया है। भ्रष्टाचार समाज को खोखला बना दे रहा है। भ्रष्टाचार का अर्थ है ऐसा आचरण जो सामाजिक मूल्यों के विरूद्ध है। भ्रष्टाचार अनैतिकता को जन्म देता है। यह एक ऐसी बुराई है जो समाज को धुंध की तरह पतन के गर्त में गिरा रही है। समाज से इसे निर्मूल निकाल देना चाहिए। सिंचन जड़ में दिया जाता है और जब जड़ मजबूत रहती है तो वृक्ष अपने आप मजबूत बनता है। भ्रष्टाचार की जड़ें बहुत गहरी हैं। इसका ताना–बाना ऊपर से नीचे तक सर्वत्र व्याप्त है।

कोई भी अनैतिक कार्य भ्रष्टाचार कहलाता है। भारतीय संस्कृति आचार को सबसे अधिक महत्त्व दिया गया है। यहां कहा गया है कि यदि धन नष्ट हो जाये तो कुछ नष्ट नहीं हुआ, यदि स्वास्थ्य कमजोर या नष्ट हो जाए तो कुछ नष्ट हुआ, किन्तु यदि चरित्र नष्ट हो जाए तो मानव की सम्पूर्ण पूंजी ही नष्ट हो गयी। हमारे देश में चरित्र को बहुत अधिक महत्त्व दिया गया है। आचरण से जुड़ा हुआ वह कार्य जो पतन की ओर ले जाए वह भ्रष्टाचार है। मानव जीवन में चार पुरूषार्थ हैं– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इसी के साथ–साथ ही जीवन को चार आश्रमों में भी बांटा गया है। ये आश्रम हैं ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। ब्रह्मचर्य आश्रम में शिष्य गुरु के आश्रम में रहकर ज्ञान अर्जित करता है। गृहस्थ आश्रम में स्वदार संतोष के माध्यम से गृहस्थ धर्म का पालन करता है। वानप्रस्थ आश्रम में घर से विरक्त होने लगता है और संन्यास आश्रम में सब कुछ त्यागकर एकान्तवास करता है। यह भारतीय धर्म की एक परम्परा है।

मानव के मन में धन प्राप्ति की इतनी अधिक लालसा हो गयी है कि किसी की हत्या करके भी यदि धन प्राप्त हो तो उसमें वह कोई संकोच नहीं करता है। सरकारी कार्यालयों में भ्रष्टाचार का ऐसा जाल फैला हुआ है कि उसमें फंस जाने के बाद व्यक्ति का प्राणांत हो जाता है। भ्रष्ट आचरण से लोग प्रभूत मात्रा में धन अर्जित कर रहे हैं। ऊँची–ऊँची अट्टालिकाएं बना रहे हैं। किन्तु जब कानूनी शिकंजा उनके ऊपर कसा जाता है तो उनकी कार्यप्रणाली सामने आती है। उनकी सम्पत्ति पर आयकर का छापा मारकर ऐसे लोगों को जेल के शिकंजों में ठूस दिया जाता है। सरकारी कार्यालयों में अधिकारियों द्वारा भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया जाता है। गरीब और अमीर के भेद की खाईं भ्रष्टाचार के कारण बढ़ती जा रही है। भ्रष्टाचार की जड़े बहुत गहरी हैं। प्रायः हर जगह भ्रष्टाचार दिखाई दे रहा है। निर्माण कार्यों में भ्रष्टाचार, नौकरियों में भ्रष्टाचार और जहां भी जाईये वहीं भ्रष्टाचार का बोलबाला रहता है। सरकारी योजनाओं का सीधा लाभ भ्रष्टाचार के कारण जनता को नहीं मिल पाता। पैसे का लेनदेन सर्वत्र चलता रहता है। ऐसी अवस्था में जनता का विश्वास सरकार पर से हट जाता है। यह अनुचित तरीका है। इसका दहन जरूरी है। भ्रष्टाचार को नष्ट करना सबसे

बड़ी प्राथमिकता होनी चाहिए। जिस देश और समाज में भ्रष्टाचार रहता है वह देश और समाज कलंकित हो जाता है।

भ्रष्टाचार दूर करने के लिए नैतिकता आवश्यक है। नैतिक आचरण से आत्म सुख प्राप्त होता है। नैतिक व्यक्ति निडर होता है। उसको किसी से भय नहीं लगता। उसके जीवन में प्रामाणिकता रहती है। जो अनैतिक आचरण करता है धीरे–धीरे उसका पतन होता जाता है। जो दूसरे के लिए कुंआ खोदता है, ईश्वर उसके लिए पहले से ही कुंआ खोदकर उसको गिरा भी देते हैं। अनैतिक आचरण करने वाला व्यक्ति अपने बूरे कर्मों के परिणामस्वरूप नरकगामी होता है। धोखाधड़ी, माप–तोल में कमी करना, बेईमानी करना आदि कार्य अनैतिक आचरण के कार्य है। जब ईश्वर ने जीविकोपार्जन के नैतिक मार्ग बना रखे हैं तो अनैतिक आचरण करके लोक और परलोक को दूषित नहीं करना चाहिए। नैतिक व्यक्ति ईमानदार होता है, उसके जीवन में सर्वत्र, सदाचार और मूल्यों का महत्व रहता है।